6सेमेस्टर आनर्स ,डी एस ई

रवीन्द्रनाथ ठाकुर–एक परिचय

जन्म–7मई सन्1861 ,जन्म स्थान–कलकत्ता के जोरासाको में, पिता–देवेन्द्रनाथ ठाकुर ,माता–शारदादेवी, दादा–द्वारकानाथ ठाकुर। रवीन्द्रनाथ ठाकुर माता–पिता की चौदहवीं संतान थे। द्वारकानाथ ठाकुर जमींदार होने के साथ–साथ' कार एण्ड टैगोर कंपनी ' के संयुक्त मालिक थे।

मृत्यु–7 अगस्त 1941 ई

शिक्षा– रवीन्द्रनाथ ठाकुर को ओरिएन्टल सेमिनारी ,नॉर्मल स्कूल, बंगाल एकेडमी, सेन्ट जेवियर्स स्कूल में शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेजा गया पर स्कूल में उनका मन नहीं लगता था। उन्होंने घर पर ही विविध विषयों के साथ–साथ संगीत और चित्रांकन की शिक्षा प्राप्त की। उन्हें कानून की शिक्षा प्राप्त करने के लिए विदेश भेजा गया पर वे बीच में ही लौट आये।

विवाह–9 दिसंबर 1883 ई को बेणीमाधव रायचौधरी की पुत्री भवतारिणी देवी के साथ। विवाह के बाद नाम मृणालिनी रखा गया।

काव्य–संग्रहः संध्या–संगीत, प्रभात–संगीत, छवि ओ गान, कडि. ओ कोमल, मानसी, सोनार तरी, चित्रा, चैताली, क्षणिका, कल्पना, कथा, काहिनी, खेया, नैवेद्य, बलाका, पूरबी, महुआ, पुनश्च, शेषसप्तक, पत्रपुट, श्यामली, प्रान्तिक, आकाश प्रदीप, सेंजूती, नवजातक, साँनाई, शेाकसज्जा, आरोग्य और जन्मदिने।

लघु कहानी संग्रह–गल्प गुच्छ। प्रथम लघु कहानी–भिखारिणी।

उपन्यास–करूणा (प्रथम उपन्यास), बोउठाकुरानीर हाट, राजर्षि, चोखेर बाली, नौका डूबी, गोरा, घरे–बाईरे, चार अध्याय, चतुरंग, शेषेर कविता, दुई बोन और मालंच।

नाटक–बाल्मीकि प्रतिभा, कालमृगया, मायार खेला, राजा उ रानी, तपती, विसर्जन।

काव्य नाटक–चित्रांगदा, कर्ण–कुन्ती संवाद, गांधारिर आवेदन, ।

नृत्य–नाटक– ताशेर देश, चित्रांगदा, चांडालिका, श्यामा।

नाट्य रूपक– राजा अरूप रतन, मुक्त धारा, रक्त करबी, अचलायन।

निबंध–संग्रह–प्राचीन साहित्य, लोक साहित्य, आधुनिक साहित्य, साहित्येर पथे।

यात्रा–वृतांतः यूरोप प्रवासीर पत्र, यूरोप यात्रीर डायरी, जापानी यात्री, रासीयार चिठि ,यात्री (उन्होंने ग्यारह बार विदेश यात्रा की)।

रवीन्द्र–संगीत संकलनः गीतांजली, गीतिमाल, गीतिका।

गीतांजलि का प्रकाशन–कालः सन्1910

सम्मान/पुरस्कार–सन् 1913 में गीतांजलि के लिए स्वीस एकेडमी की ओर से नोबेल पुरस्कार दिया गया। सन् 1913 में कलकत्ता विश्वविद्यालय की ओर से ड़ि लिट की उपाधि प्रदान की गई। सन् 1915 में ब्रिटिश सरकार की ओर से नाईट हुड की उपाधि दी गई। सन् 1940 में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय की ओर से ड़ि लिट की उपाधि प्रदान की गई।

रवीन्द्रनाथ ने जालियावाला बाग हत्याकांड (13 अप्रैल 1919)के विरोध में नाईट हुड की उपाधि का परित्याग किया। उन्होंने 'विश्व भारती' नामक विश्वविद्यालय की स्थापना शांतिनिकेतन में सन् 1921 में की।